



8. TULSIDAS

1. कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

उत्तर:- कवितावली में उद्धृत छंदों से यह ज्ञात होता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। उन्होंने देखा कि उनके समय में बेरोजगारी की समस्या से मजदूर, किसान, नौकर, भिखारी आदि सभी परेशान थे। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच रहे थे। सभी ओर भूखमरी और विवशता थी।

2. पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है – तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर:- तुलसी ने कहा है कि पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है। मनुष्य का जन्म, कर्म, कर्म-फल सब ईश्वर के अधीन हैं। निष्ठा और पुरुषार्थ से ही मनुष्य के पेट की आग का शमन हो सकता है। फल प्राप्ति के लिए दोनों में संतुलन होना आवश्यक है। पेट की आग बुझाने के लिए मेहनत के साथ-साथ ईश्वर कृपा का होना जरूरी है।

3. तुलसी ने यह कहने की ज़रूरत क्यों समझी?

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ
/ काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न
सोऊ।

इस सवैया में काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब कहते तो
सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता?

उत्तर:- तुलसी इस सवैया में यदि अपनी बेटी की शादी की बात
करते तो सामाजिक संदर्भ में अंतर आ जाता क्योंकि विवाह के
बाद बेटी को अपनी जाति छोड़कर अपनी पति की ही जाति
अपनानी पड़ती है। दूसरे यदि तुलसी अपनी बेटी की शादी न
करने का निर्णय लेते तो इसे भी समाज में गलत समझा जाता
और तीसरे यदि किसी अन्य जाति में अपनी बेटी का विवाह
संपन्न करवा देते तो इससे भी समाज में एक प्रकार का जातिगत
या सामाजिक संघर्ष बढ़ने की संभावना पैदा हो जाती।

4. धूत कहौ... वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखलाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमान भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर:- हम इस बात से सहमत हैं कि तुलसी स्वाभिमान भक्त
हृदय व्यक्ति है क्योंकि 'धूत कहौ...' वाले छंद में भक्ति की
गहनता और सघनता में उपजे भक्तहृदय के आत्मविश्वास का
सजीव चित्रण है, जिससे समाज में व्याप्त जात-पाँत और
दुराग्रहों के तिरस्कार का साहस पैदा होता है। तुलसी राम में
एकनिष्ठा रखकर समाज के रीती-रिवाजों का विरोध करते हैं
तथा अपने स्वाभिमान को महत्त्व देते हैं।

***** END *****